अमर उजाला

नई दिल्ली । बुधवार, 27 फरवरी 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

जब तक आप आंतरिक रूप से शांति नहीं खोज पाते, तो इसे अन्यत्र खोजने से कोई लाभ नहीं है...

- एल. ए. रोशेफूकॉल्ड

प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक

भारतीय वायुसेना की ताजा कार्रवाई 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक से भिन्न है, जिसमें 1971 के युद्ध के बाद पहली बार भारतीय लड़ाकू विमानों ने नियंत्रण रेखा के पार जाकर कार्रवाई कर पाकिस्तान में स्थित आतंकी शिविर को ध्वस्त किया है।

आतंक के गढ़ में

भारतीय वायुसेना ने पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर हुए भीषण आतंकी हमले के दो हफ्ते के भीतर नियंत्रण रेखा के पार जाकर पाकिस्तान के खैबर पख्तुनख्वा के बालाकोट में स्थित जैश-ए-मोहम्मद के सबसे बड़े आतंकी शिविर को ध्वस्त कर पाकिस्तान को कड़ा संदेश दिया है, जिसने अब तक किसी आतंकी पर कोई कार्रवाई करना जरूरी नहीं समझा है। भारतीय वायुसेना की यह कार्रवाई 2016 में आतंकी शिविरों को नष्ट करने के लिए की गई सर्जिकल स्ट्राइक से भिन्न है, जिसमें 1971 के युद्ध के बाद पहली बार भारतीय लड़ाकू विमानों ने नियंत्रण रेखा के पार जाकर कार्रवाई की है। ध्यान रहे, इस कार्रवाई के दौरान बहुत संयम से काम लिया गया है और जैसा कि विदेश सचिव विजय गोखले ने बताया कि यह 'गैर सैन्य सुरक्षात्मक कार्रवाई' थी। यानी इस कार्रवाई के दौरान ध्यान रखा गया कि किसी नागरिक को कोई नुकसान न हो। वास्तव में पाकिस्तान ने भारत को यह कठोर कदम उठाने को मजबूर किया है, जिसमें जैश के कई वरिष्ठ कमांडरों सहित बड़ी संख्या में आतंकी मारे गए हैं। अमूमन इस तरह की सुरक्षात्मक कार्रवाई अमेरिका और इस्राइल करते रहे हैं, लेकिन भारत ने पहली बार आतंकियों के खिलाफ सीमा पार जाकर यह कार्रवाई की है, जो आतंकवाद के खिलाफ उसकी बदलती रणनीति को रेखांकित करता है। हैरानी इस बात की है कि जैश ने साफ तौर पर पुलवामा हमले की जिम्मेदारी ली है, इसके बावजूद पाकिस्तान निर्लज्जता के साथ आतंकी गतिविधियों से इनकार करता आया है। भारत ने पाकिस्तान से तरजीही देश होने का दर्जा वापस लिया है, संयुक्त राष्ट्र तक में पुलवामा हमले की निंदा की गई है और एफएटीएफ (फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स) ने आतंकी फंडिग को लेकर पाकिस्तान को ग्रे लिस्ट से हटाकर काली सूची में डालने की चेतावनी दी है। ये सारे घटनाक्रम पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग-थलग करने के लिए काफी हैं। पाकिस्तान ने भारत की ताजा कार्रवाई के बाद संयुक्त राष्ट्र में जाने की धमकी दी है, लेकिन इससे उसे किसी तरह की राहत मिलेगी लगता नहीं, क्योंकि वह पूरी तरह से बेनकाब हो चुका है। इसके बावजूद अभी सतर्क रहने की जरूरत है, क्योंकि पाकिस्तान की ओर से सरहद पर भड़काने वाली कार्रवाई की जा सकती है।

अपनी लड़ाई लड़ने में सक्षम

इस हवाई हमले का सबसे बड़ा संदेश यह है कि हम अपनी लड़ाई खुद ही लड़ने में सक्षम हैं और इसके जो भी परिणाम होंगे, उसे झेलने के लिए भी तैयार हैं।

मारूफ रजा, सामरिक विश्लेषक

भारत ने आतंकवाद के खिलाफ एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम देते हुए नियंत्रण रेखा के पार पाकिस्तान में घुसकर बालाकोट स्थित आतंकी शिविरों को पूरी तरह से तबाह कर दिया है। यह कार्रवाई हाल ही में पुलवामा में हुए आत्मघाती बम हमले के जवाब में की गई, जिसमें सीआरपीएफ के चालीस जवान मारे गए थे। पुलवामा हमले को लेकर पूरे देश में आक्रोश और गुस्से की भावना देखी गई तथा सार्वजनिक रूप से पाकिस्तान से प्रतिशोध लेने की मांग होने लगी। उस हमले के पीछे जैश-ए-मोहम्मद और पाकिस्तानी सेना का हाथ था। उस हमले ने भारत के समक्ष एक चुनौती पेश कर दी थी कि भारत पाकिस्तान को कैसे इसका जवाब देता है। प्रधानमंत्री मोदी ने सैन्य विकल्पों का चुनाव हमारे सशस्त्र बलों की पसंद पर छोड़ दिया था, जो अपना काम बेहतर जानती है।

भारत द्वारा पाकिस्तान की आतंकी जड़ों पर इस हवाई हमले से पाकिस्तान और दुनिया को कई किस्म के संदेश देने की कोशिश की गई है। पहला तो यह कि अब भारत के सब्र की हद पार हो चुकी है और भारत नियंत्रण रेखा से आगे जाकर पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर हमला करने के लिए तैयार है, जिनको पाकिस्तान इतने वर्षों से पनाह देता आया है। इससे भारत के समर्थन में खड़े दुनिया के देशों को भी यह संदेश दिया गया है कि भारत अपनी सुरक्षा के लिए उनके पास नहीं आता है, बल्कि भारत को उनकी मदद इसलिए चाहिए कि वे आतंकवाद को पनाह देने वाले पाकिस्तान को अलग-थलग करें और पाकिस्तान की आर्थिक कमर तोड़ दें, ताकि वह आतंकवाद को पनाह देना बंद करे। पाकिस्तानी सेना के जनरलों को यह एहसास हो जाए कि जिन आतंकवादियों को उन्होंने इतने वर्षों से पाला-पोसा है, अब वही आतंकवादी उनके लिए आर्थिक बोझ बन चुके हैं।

दूसरा संदेश यह है कि हमारे पास पाकिस्तान से संचालित आतंकी खबरों की खुफिया जानकारियां हैं। हमने इंटेलिजेंस खबरों का एक डाटाबेस बना रखा है, जिसके बारे में हमने दुनिया के साथ ही पाकिस्तान को भी बार-बार बताया है। लेकिन पाकिस्तान कहता है कि उसे ऐसी गतिविधियों की जानकारी नहीं है! इस हमले के जरिये हमने बता दिया है कि अगर पाकिस्तान आतंकियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करना चाहता, तो हम कर सकते हैं। तीसरा हमने यह संदेश दिया है कि भारत आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई कश्मीर के अंदर भी लड़ सकता है और कश्मीर के बाहर पाकिस्तान में भी। जैसा कि अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था, 'हम आर-पार की लड़ाई लड़ने को तैयार हैं।' अब अगर पाकिस्तान इसका जवाब देने की कोशिश करता है, तो दुनिया भर में यह साबित हो जाएगा कि पाकिस्तान इन आतंकवादियों का संरक्षक है। उसके समक्ष यह समस्या पैदा हो गई है कि दुनिया के सामने खुद को आतंकवाद का पीड़ित बताने वाला पाकिस्तान अब स्वयं को कैसे पीड़ित बताएगा, जबकि आतंकवादियों को पनाह देता है।

पाकिस्तान को अब अपनी जनता को भी यह जवाब देना पड़ेगा कि इतने वर्षों से उसकी सेना ने इतना पैसा खुद पर खर्च किया, तो सेना क्यों उनकी हिफाजत नहीं कर पा रही है। इसका पाकिस्तान कैसे मुकाबला करता है, हमें देखना पड़ेगा। लेकिन इस कार्रवाई के बाद यह तो जरूर है कि पाकिस्तान दो-तीन कदम उठाएगा। पहला तो यही कि वह हिंदुस्तान में और आतंकी हमले करवाने की कोशिश करेगा। आतंकवादियों और भारत में अपने पाले-पोसे समर्थकों को वह भारत-विरोधी कदम उठाने के लिए उकसाएगा। इसके अलावा वह सीमा पर फौज की भारी मात्रा में तैनाती करेगा और कहेगा कि हम हमले के बारे में सोच रहे हैं। इसके साथ वह परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की भी धमकी देगा। उसका यह मकसद होगा कि वह दुनिया को दिखाए कि पाकिस्तान अब भारत से लड़ने के लिए तैयार है और इसी धमकी से दुनिया के बड़े-बड़े देशों को कश्मीर मुद्दे पर हस्तक्षेप करवाने की कोशिश करेगा।

कुछ लोगों को आशंका हो सकती है कि युद्ध छिड़ने की स्थिति में दोनों ओर से एक बटन दबाकर परमाणु हथियारों से दूसरे को मिटाया जा सकता है। लेकिन ऐसी आशंका करने वाले बहुत कम जानते हैं कि अगर परमाणु हथियारों का इस्तेमाल किया जा सकता है, तो युद्ध कब और कैसे लड़े जाते हैं। वास्तव में, द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में अमेरिका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी पर बम विस्फोट को छोड़कर परमाणु युद्ध का अध्ययन परमाणु हथियारों के गैर-उपयोग के अध्ययन पर आधारित है। पाकिस्तानी सेना अपनी सीमाएं जानती हैं और इसलिए भारत को उलझाने के लिए आतंकवादियों का इस्तेमाल करती है।

यह धारणा भी गलत है कि अगर भारत ने अन्य सभी राजनयिक, आर्थिक और भू राजनीतिक विकल्प समाप्त होने के बाद पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य अभियान शुरू किया, तो चीन पाकिस्तान के समर्थन में आ जाएगा। बेशक चीन ने पाकिस्तान में सीपीईसी और ग्वादर पोर्ट के अलावा पाक अधिकृत कश्मीर के उत्तरी क्षेत्र में सिंधु पर कुछ बड़े बांधों से माध्यम से बहुत बड़ा निवेश किया है, लेकिन चीन हमेशा अंतरराष्ट्रीय राय के खिलाफ नहीं जाने के प्रति सावधान रहा है, जब तक दक्षिण चीन सागर जैसे उसके अपने एजेंडे को चुनौती नहीं दी जाती। हम जानते हैं कि चीन ने 1965, 1971 के भारत-पाक युद्ध और कारगिल संघर्ष के दौरान पाकिस्तान के पक्ष में हस्तक्षेप नहीं किया था।

इस हवाई हमले के अलावा भारत पाकिस्तान पर दबाव बनाए रखना जारी रखेगा। एक तो सिंधु नदी के जल को लेकर और दूसरा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसे कूटनीतिक प्रयासों से अलग-थलग रखकर उसकी आर्थिक कमर तोड़ने की कोशिश करेगा। भारत को सावधान रहने की भी जरूरत है, जैश और पाकिस्तान, दोनों भारतीय शहरों और नागरिकों पर हमले की कोशिश कर सकते हैं, क्योंकि मसूद अजहर का भाई भी इस हवाई हमले में मारा गया है। इस हमले का एलान विदेश सचिव ने किया, रक्षा सचिव ने नहीं, इससे साफ है कि यह सैन्य कार्रवाई नहीं थी, बल्कि आतंकवाद विरोधी कार्रवाई थी। पूरे देश के आला अधिकारियों से विचार-विमर्श के बाद इस ऑपरेशन को अंजाम दिया गया है। इस हवाई हमले का सबसे बड़ा संदेश यह है कि हम अपनी लड़ाई खुद ही लड़ने में सक्षम हैं और इसके जो भी परिणाम होंगे, उसे झेलने के लिए भी तैयार हैं।

अंतर्ध्वनि

>> अमरकांत

भावनात्मक एकता, स्वावलंबन जरूरी है जीत के लिए

हम जब पत्रकार हुए तब दो सौ रुपए वेतन था। पढ़ने में तबीयत नहीं लगी तो हम आगरा अपने अंकल के पास चले गए। मैंने कहा कि हम पत्रकार बनना चाहते हैं। वहां से 'सैनिक' अखबार निकलता था। हम 'सैनिक' अखबार में काम करते थे। हमारे एक मित्र प्रगतिशील लेखक संघ में थे। उन्होंने कहा कि चलो एक मीटिंग में ले चलते हैं। वहां उन्होंने मेरा परिचय ही गजल गायक के तौर पर कराया, कहा कि यह गजल गाते हैं। रामविलास शर्मा वहां थे। कई लोगों ने आग्रह किया तो मैंने गजल सुनाई।

फिर जब भी मीटिंग में जाता था, गजल की फरमाइश होती। पर बाद में मुझे लगा कि सब लोग कविता-कहानी सुनाते हैं, लेकिन मुझसे केवल गजल सुनना चाहते हैं। मुझे कुछ गंभीर करना चाहिए। तब मैंने कहानी लिखी 'इंटरव्यू'। यह मेरी पहली कहानी है। साहित्य बहुत कुर्बानी मांगता है। सब चूस लेता है। कीमत तो देनी ही पड़ती है। उस समय की पत्रकारिता और साहित्य, दोनों बहुत कठिन था। आज तो लोगों का सहयोग मिल जाए तो करियर बन जाता है। रचनाओं के लिए आलोचना टीका का काम करती है। आलोचक टीकाकार होता है। आलोचना बड़ा काम है। रचना को समझाने में आलोचना का योगदान होता है। रचनाकार अपनी रचना की कमी और खूबी नहीं समझा सकता है।

'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास आंदोलन पर जरूर है, पर इसमें कोई नेता नहीं है। नायक नहीं है। जनता ही इसका कथानायक है। उस आंदोलन को जीवंत बनाने में हर वर्ग के लोगों ने साथ दिया। तब के हथियार थे-स्वदेशी, एकता, मद्यनिषेध, अछूत विद्रोह, स्वावलंबन। इन्हीं हथियारों से वह लड़ाई लड़ी गई। लड़ाई हथियारों से ही नहीं, भावनाओं से भी लड़ी जाती है। तोप-हथियार से लड़ाई नहीं जीत सकते आप। भावनात्मक एकता, स्वावलंबन बहुत जरूरी है जीत के लिए।

-दिवंगत हिंदी उपन्यासकार

...और बगल में अफगानिस्तान

अफगान फिर आशंका जताने लगे हैं कि पाकिस्तानी सेना अपने वफादार आतंकियों द्वारा अफगानिस्तान पर प्रभाव बनाने में जुटी है। पाकिस्तान समर्थक आतंकी डूरंड रेखा पर ठिकाना बनाए हुए हैं, इससे अमेरिका के लिए मुश्किल बढ़ सकती है।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चंद दिन पहले युद्धग्रस्त अफगानिस्तान में तैनात अमरीकी-नाटो 14,000 सैनिकों में से 7,000 को अगले छह महीने में वहां से वापस बुलवाने के अपने फैसले की घोषणा की थी। साथ ही वहां शांति बहाली के लिए पाकिस्तान से तालिबान को बातचीत के लिए राजी करने की अपील की थी। ट्रंप मंत्रिमंडल के कई सांसदों ने इसका कड़ा विरोध किया। अफगान राष्ट्रपति अशरफ गनी ने भी अप्रसन्नता जताई। भारत भी इससे खुश नहीं था, क्योंकि फैसला लेने से पहले ट्रंप ने भारत को भी विश्वास में नहीं लिया था, जिसका अफगानिस्तान में बहुत कुछ दांव पर लगा हुआ है। पर ट्रंप ने अब इस फैसले पर अमल रोक दिया है।

दरअसल ट्रंप पर चारों तरफ से दबाव पड़ रहा था। अमेरिकी सीनेट ने सैनिकों को वापस बुलवाने के ट्रंप के फैसले के खिलाफ भारी बहुमत से एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किया। जिसमें कहा गया कि सीरिया व अफगानिस्तान से सेना को वापस बुलवाने पर हम मुश्किल से हाथ आई सफलता गवां सकते हैं और अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डाल सकते हैं।

एक वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने आशंका जताई कि अगर फौज को वापस बुलवा लिया गया, तो पाकिस्तान आतंकी संगठन पड़ोसी देशों और दूसरी जगहों पर दहशत फैलाने के लिए अपनी सुरक्षित पनाहगाहों का फायदा उठाते रहेंगे। अफगान एक बार फिर आशंका जताने लगे हैं कि पाकिस्तान के सेना प्रतिष्ठान अपने वफादार आतंकियों द्वारा अफगानिस्तान पर प्रभाव बनाने में जुटे हैं। ऐसे समय में जब पाकिस्तान समर्थक आतंकी डूरंड रेखा पर ठिकाना बनाए हुए हैं, तब ये स्थिति

कुलदीप तलवार

अमेरिका के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकती है। इससे जंग से प्रभावित अफगानों की परेशानी भी बढ़ सकती है। पाकिस्तान समर्थक आतंकियों को पाक हर तरह से मदद और हथियार दे रहा है। तालिबान जनता द्वारा चुनी हुई सरकार को बेदखल करने और सत्ता पर कब्जा जमाने की कोशिश में जुटे हुए हैं। हाल ही में पाकिस्तान के बदनाम आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर आत्मघाती हमला करवाया, जिसमें 40 जवान शहीद हो गए। जिसकी जैश-ए-मोहम्मद ने जिम्मेदारी ली है। काबिलेगौर है कि इस तरह का हमला पहली बार जम्मू-कश्मीर में हुआ। जबकि अफगानिस्तान में इस तरह के हमले होते ही रहते हैं। इससे पाकिस्तान की नई रणनीति का पता चलता है।

अमेरिका और तालिबान के बीच कतर में चली छह दिवसीय बैठक में तालिबान ने अमेरिकी को यकीन दिलाया था कि इस्लामिक स्टेट या अल कायदा समेत किसी भी राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय दहशतगर्द संगठन को अमेरिका या किसी दूसरे देश के खिलाफ अफगानिस्तान की धरती इस्तेमाल नहीं करने देंगे। यह एक झूठा वायदा था। तालिबान जानते हैं कि अफगानिस्तान से जाने के बाद अमेरिका इस वायदे पर अमल कराने पर उन्हें मजबूर नहीं कर सकता। यह बात अलग है कि तालिबान को अफगानिस्तान में इस्लामिक स्टेट के लड़ाकुओं से तगड़ी चुनौती मिल रही है, जिसने अफगानिस्तान में अपने कदम जमा लिए हैं। वे न केवल वहां की सरकार से मोर्चा लिए हुए हैं, बल्कि तालिबान की ताकत को तोड़ने में बहुत बड़ा रोल अदा कर रहे हैं। इस समय अफगानिस्तान में आईएस के हजारों दहशतगर्द मौजूद हैं। खुफिया एजेंसियों का मानना है कि इस्लामिक स्टेट का खतरा अब भी बना हुआ है।

आम ख्याल यह है कि अमेरिका-नाटो की फौजों की वापसी होते ही अफगान सरकार और फौज के पांव उखड़ जाएंगे। जुलाई में राष्ट्रपति का चुनाव होना है, जो बेमायने हो जाएगा। सच तो यह है कि अगर अमेरिकी संकल्प कमजोर पड़ गया, तो तालिबान का रुख और कठोर हो जाएगा।

मंजिलें और भी हैं

>> आनंद त्यागराजन

आत्महत्या के विरुद्ध एक रचनात्मक पहल

तमिलनाडु के तिरुवरूर जिले में स्थित है नीदामंगलम गांव। समूचे तमिलनाडु की तरह यहां भी खुदकुशी की किसी घटना से किसी को आश्चर्य नहीं होता था। दरअसल तमिलनाडु राज्य में महिला खुदकुशी की दर दुनिया के सबसे खराब राज्यों की श्रेणी की है। बिल्कुल किसी महामारी की तरह। इसी गांव के सरकारी स्कूल में मेरी तैनाती हुई। मेरा ध्यान भी गांव में होने वाली आत्महत्याओं पर गया। मेरे स्कूल में जब भी शिक्षक-अभिभावक बैठक का अयोजन होता, तो उस बैठक में अभिभावकों की संख्या बहुत कम होती। अधिकतर बच्चे मुझे बताते कि उन्होंने अपनी मां-पिता में से एक या फिर दोनों को खो दिया है।

मेरे लिए बच्चों की बातें हैरान करने की वजह तो नहीं थी, पर चूंकि मैंने खुद अपने मां-बाप को बहुत कम उम्र में खो दिया था, सो उनकी पीड़ा महसूस कर पाना मेरे लिए आसान था। लेकिन मैं सिर्फ यह महसूस करना ही नहीं चाहता था। मैं चाहता था कि उन्हें मेरी तरह मां-बाप के बगैर जिंदगी न गुजारनी पड़े। कुछ यही सब सोचकर मैंने अपने छात्रों को साथ लेकर एक ऐसी योजना पर काम करना शुरू कर दिया, जिससे कि आत्महत्या की दर कम की जा सके।

दो साल के लगातार प्रयासों के बाद हमारा गांव शून्य आत्महत्या वाला गांव बन गया।

सबसे पहले तो मैंने समाज के विभिन्न अगुआकारों के साथ एक बैठक की, जिसमें इस मुद्दे पर चर्चा की गई। मगर उस प्रयास से मुझे कुछ खास हासिल नहीं हुआ। लोगों की प्रतिक्रियाएं फीकी रहीं। उसके बाद मैंने अपनी सभी कोशिशों में स्कूली बच्चों को शामिल किया। छात्रों ने अपने समाज में एक-दूसरे को जागरूक करना शुरू कर दिया। इस मुद्दे पर इससे पहले कभी बातचीत नहीं की गई थी। जीवन के मूल्य के प्रति दृष्टिकोण में बुनियादी बदलाव लाने के लिए लोगों की मानसिकता में महत्वपूर्ण बदलाव की जरूरत थी और छात्रों के साथ-साथ मेरे लिए यह आसान काम नहीं था। लेकिन मैंने प्रयास करना नहीं छोड़ा। स्कूल के वार्षिकोत्सव में बच्चों ने इसी विषय पर एक नाटक का मंचन किया। नाटक का दर्शकों पर गहरा असर पड़ा। जो भी लोग उस दिन स्कूल में थे, घर जाते वक्त उनके दिमाग में एक विचार कौंध रहा था, जो शायद उन्हें जिंदगी की अहमियत समझा रहा था।

इसके बाद मैंने गांव में डायमंड बॉयज नाम से एक यूथ क्लब का गठन किया। इस समूह के सदस्यों ने 380 परिवारों तक पहुंचकर उनकी काउंसलिंग का काम किया। आगे चलकर इस समूह ने हर गली-मुहल्ले में नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से भी जागरूकता फैलाने का काम किया। हर महीने के इस अभ्यास ने लोगों को आत्महत्या मुक्त समाज बनाने के लिए मानसिक रूप से इतना मजबूत कर दिया कि हमें सफल होना ही था। दो साल के लगातार प्रयासों के बाद हमारा गांव शून्य आत्महत्या वाला गांव बन गया। हमारा स्कूल भी मीडिया की नजरों में किसी हीरो से कम नहीं था। लोग हमारी तारीफें करने लगे। वास्तव में ये स्कूली बच्चों की मेहनत का ही नतीजा था। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान इन बच्चों को तमाम दूसरे तरह के अनुभव भी हासिल हुए। उन्हें अहमदाबाद जाकर एक अंतरराष्ट्रीय संस्था द्वारा चलाए जा रहे कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम में शरीक होने का भी मौका मिला। न सिर्फ बच्चों, बल्कि उनके पूरे समुदाय के लिए यह अवसर किसी उत्सव से कम नहीं था।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

हरियाली और रास्ता

जिंदगी के थैले में ज्ञान के फल

दर्श की कहानी, जिसे उसकी दादी ने कहानी के जरिये जिंदगी का महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाया।

दर्श अपनी दादी से बोला, दादी, हमारे पास तो सबकुछ है-पैसा, घर, गाड़ी। फिर क्या जरूरत है मुझे पढ़ने की? दादी बोलीं, बात तो काफी गंभीर है। यह बात भी ठीक है कि तुम्हारे पास तो सबकुछ है, लेकिन क्या तुम अपने थैले में जरूरत का सामान इकट्ठा कर रहे हो? दर्श एकदम चकरा गया और बोला, थैला? कैसा थैला? दादी बोलीं, अच्छा चलो, तुम्हें एक कहानी सुनाती हूं। एक बहुत अमीर राजा था। उसके तीन बेटे थे। एक दिन राजा ने अपने तीनों बेटों को आदेश दिया कि एक-एक थैला लेकर बगीचे में जाएं और वहां से अच्छे-अच्छे फल जमा करें। वे तीनों अलग-अलग बागों में जाकर अपना थैला भरने लगे। पहले बेटे ने काफी मेहनत के बाद बढ़िया और ताजा फलों से थैला भरा। दूसरे बेटे ने ताजा, कच्चे, गले-सड़े फल थैले में भर लिए। उसे पहले वाले से काफी कम समय लगा। तीसरे बेटे ने समय बचाने के लिए जल्दी-जल्दी उस थैले में घास, और पत्ते भर लिए और फिर जाकर आराम से एक वृक्ष के नीचे सो गया। उसी दिन राज्य पर कुछ लोगों ने हमला किया और राजा और उनके बेटों को जेल में बंद कर दिया। अब जेल में उनके पास खाने-पीने को कुछ भी नहीं था, सिवाय उन थैलों के। जिस बेटे ने अच्छे-अच्छे फल जमा किए, वह तो मजे से खाता रहा। लेकिन जिसने ताजा, कच्चे, गले-सड़े फल जमा किए थे, उसे कुछ दिन बाद खराब फल खाने पड़े, जिससे वह बीमार हो गया। उसे बहुत तकलीफ हुई। और तीसरे बेटे, जिसने थैले में सिर्फ घास और पत्ते जमा किए थे, वह कुछ ही दिनों में भूख से मर गया। दादी बोलीं, हमारी जिंदगी ही हमारा थैला है। इस कहानी में हम जिन फलों की बात कर रहे हैं, वह है हमारा ज्ञान। हम जितना ज्ञान इकट्ठा करेंगे, उतना आगे तक जा पाएंगे।

जिंदगी का हर एक पल कीमती है। इसे बहुत समझदारी से उपयोग करें।

खुली खिड़की

कार्यस्थल पर लैंगिक अनुपात

अफ्रीका के दक्षिण पूर्व में स्थित मोजाम्बिक में दुनिया के किसी भी मुल्क के मुकाबले महिला कामगारों का अनुपात सबसे ज्यादा है। गौरतलब है कि कार्यस्थल पर लैंगिक अनुपात के मामले में भारत की स्थिति अच्छी नहीं है।

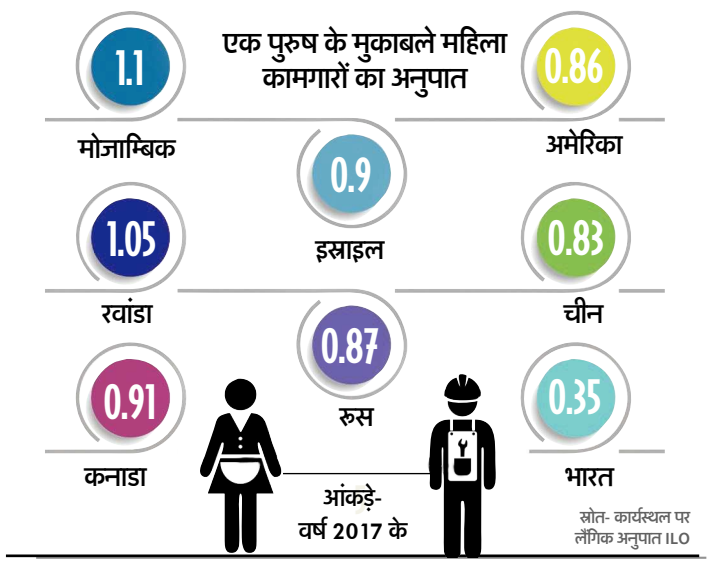

प्रेम ही धर्म

स्वामी विवेकानंद विश्वधर्म सम्मेलन में भाग लेने अमेरिका गए थे। वहां एक बुद्धिजीवी ने उनसे पूछा, आपने असंख्य धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया है। एक ही शब्द में क्या आप धर्म का सार बता सकते हैं। स्वामी जी ने तुरंत उत्तर दिया, प्राणी मात्र में भगवान के दर्शन कर सभी से प्रेम करो, यही धर्म का सार है। निष्कपट भाव से ईश्वर की खोज को भक्तियोग कहते हैं। इस भक्ति का प्रारंभ, मध्य और अंत प्रेम में होता है। इसलिए धर्मशास्त्रों में ईश्वर के साक्षात्कार के सरल साधन प्रेम, करुणा और निश्छलता बताए गए हैं।

सत्संग

अमेरिका से उन्होंने लाला गोविंद सहाय को एक पत्र में लिखा, धर्म का रहस्य आचरण से जाना जा सकता है, व्यर्थ के मतवादों से नहीं। साधुता ही श्रेष्ठ नीति है और सत्य तथा सद्गुणयुक्त व्यक्ति की विजय अवश्य होती है। अमेरिका से ही भारतीय युवाओं को पत्र लिखकर उन्होंने बताया कि और किसी बात की आवश्यकता नहीं है, जरूरत है केवल प्रेम, निश्छलता और धैर्य की। जीवन का लक्ष्य ही प्रेम है, इसलिए प्रेम ही जीवन है। यही जीवन का एकमात्र गति नियामक है। परोपकार ही जीवन है, परोपकार न करना मृत्यु के समान है।

स्वामी जी ने लिखा है, सत्य पर हमेशा अटल रहो। धन प्राप्त हो या न हो, ईश्वर पर भरोसा रखो। अपने प्रेम की पूंजी बढ़ाते रहो, सफलता स्वतः प्राप्त होगी।

-संकलित